अर्हम्

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय सीमा : 3 घंटा | तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2013) | दिनांक 21.12.2013

पंचम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

भिक्षु दृष्टांत – 30

प्र.1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। 8

(क) ''सच्ची सम्यक्त्व स्वीकार करो, सच्चे गुरु को धारण करो'' यह कथन किसने किसको कहा?

(ख) विजयचंदजी ने कौन से मार्ग को अच्छा बताया?

(ग) ''साधु को पीटना कहाँ है'' यह कथन किसने किसको कहा?

(घ) ''तुम भीखणजी के श्रावक हो सो अन्न बिना मरोगे'' हेमजी स्वामी ने इस बात का क्या उत्तर दिया?

(ङ) ''सम्यग् दृष्टि की मति, मतिज्ञान ही है'' यह कौन से सूत्र में कहा गया है?

(च) जब शुभ योगों की प्रवृत्ति होती है उस समय पहले पुन्य बंधता है या पहले निर्जरा होती है? लिखें।

(छ) ''लोढ़ो के उपाश्रय में हेमजी स्वामी टीकमजी से चर्चा कर रहे हैं इसलिए आप पधारे।'' इसके प्रत्युत्तर में स्वामीजी ने क्या कहा?

(ज) ''हिंसा के बिना धर्म होता ही नहीं।'' यह कथन किसने किसको कहा?

(झ) वेषधारी के छुरी रात के समय रखने में दोष बताने पर जीवो जी ने डोरी रात को रखने में क्या दोष बताया?

(ञ) दिल्ली की तरफ के वेषधारियों ने नव पदार्थ में ''आठ जीव और एक अजीव'' को किसकी श्रद्धा बतायी?

प्र.2 किन्हीं दो घटना–प्रसंगों को 100 से 150 शब्दों में लिखें। 10

(क) नरक में भी अजीव जाएगा? (ख) ऐसी चर्चा करते तो कैसे लगते?

(ग) यहाँ से विहार कर देना नहीं तो..... (घ) भरत क्षेत्र में साधुओं का विरह।

(ङ) सब पूरीया ही पूरीया है।

प्र.3 आचार्य जयमलजी ने भिक्षु स्वामी के सिद्धान्तों को समझा इसलिए रुधनाथजी के कहने पर भीखणजी का पीछा नहीं किया'' तीन दृष्टान्तों द्वारा इस कथन को सिद्ध करें। 12

''अथवा''

दृष्टान्तों द्वारा तेरापंथ के श्रावकों की तत्त्वज्ञान के प्रति आस्था को स्पष्ट करें।

भ्रम विध्वंसन – 35

प्र.4 किन्हीं आठ प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए। 8

(क) योग के कितने भेद हैं व कौन–कौन से हैं? (ख) प्रकीर्ण ग्रन्थ कौन बनाते हैं?

(ग) साधुओं के लिए कौन से कपाट खोलने निषिद्ध हैं? यह कौन से आगम से सम्मत हैं?

(घ) कुपात्र दान देने वाला मरणोपरान्त कौन सी योनियों में उत्पन्न होता है?

(ङ) 'भ्रमविध्वंसन' इस ग्रंथ का रचनाकाल कौन सा है?

(च) संवर की साधना किसके अनुदय से सम्भव है।

(छ) मिथ्यात्वी को मोक्ष का देश–आराधक कौन से सूत्र में कहा गया है?

(ज) ''एयं पुण्ण – पयं सोच्चा' से क्या तात्पर्य है?

(झ) सामायिक में बैठे श्रावक की आत्मा को क्या कहा गया है?

(ञ) ''नियाणा'' किसे कहते हैं?

प्र.5 किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दो या तीन वाक्य में दीजिए। 5

(क) रक्षा के सम्बन्ध में चार महत्त्वपूर्ण बातें कौन–सी हैं और उनके कौन–कौन से विकल्प जुड़े हैं।

(ख) आचारांग सूत्र के अनुसार साधु श्रावक को किन–किन नामों से सम्बोधित कर सकता है?

(ग) 'पउम चरिय' में सुपात्र किसे कहा है?

(घ) ठाणं सूत्र में धर्म और सम्प्रदाय के कितने व कौन–कौन से विकल्प बताये गये हैं?

प्र.6 कोई दो प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए। 10

(क) वे कौन से आठ गुण तथा अवगुण हैं जिससे साधु अकेला घूमता है?

(ख) वैयावृत्त्य पर टिप्पणी लिखें।

(ग) सिद्ध करें कि श्रुतरहित मिथ्यात्वी भी मोक्ष मार्ग का देश–आराधक हो सकता है।

(घ) क्षय–क्षयोपशम जन्य लब्धियों पर टिप्पणी लिखें।

प्र.7 अनुकम्पा पर सारगर्भित लेख लिखें। 12

'अथवा'

दान के लौकिक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए दान की अर्वाचीन मान्यता पर प्रकाश डालें।

भिक्षु गीता – 20

प्र.8 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए। 3

(क) ज्ञान का सार क्या है? (ख) शिक्षा के कितने व कौन–कौन से प्रकार हैं?

(ग) सहगामी के लिए कौन–कौन से गुण अपेक्षित हैं? (घ)अनुशासन का स्रोत क्या है?

(ड.) आचार्य के मुख्य कार्य क्या हैं?

प्र.9 मनोबल बढ़ाने के कौन से हेतु हैं? 5

'अथवा'

विनीत के महत्त्व को स्पष्ट करें।

प्र10 किन्हीं दो पद्यों की सप्रसंग व्याख्या करें। 12

(क) नो हीनो नो विशिष्टोऽस्ति निश्चयप्रतिपादनम्।
हीनः स्यादतिरिक्तोऽपि व्यवहारनयस्तुतौ।।

(ख) नानासंस्कारजन्मानः नानाभावा भवन्त्यमी।
अनिरूद्धाः प्रकुर्वन्ति व्यवहारमयन्त्रितम्।।

(ग) प्रीतावाच्छादयेद दोषान् प्रातिभंगे प्रकाशयेत्।
प्रत्ययं तस्य कः कुर्यात् शुद्धौ निष्ठां न यो भजेत्।।

(घ) अहिंसापथमालम्ब्य ध्यातव्यं तं मुहुर्मुहुः।
अधिकारस्य भावोऽयमहिंसामातिगच्छति।।

(ड.) प्रत्यक्षज्ञानिनः प्रायो दुर्लभा सन्ति सम्प्रति।
आगमस्तेन मंतव्यः पथदर्शनहेतवे।।

भिक्षु वाणी (पूर्व कंठस्य) – 15

प्र11 कोई दो पद्यों की पूर्ति करें। 6

(क) अथिर वेग.....री माया।। (ख) सूइ नाकें.....न वेसें।।

(ग) केइ विनीत.....पड़े अविनीत।। (घ) चोर मिले.....में कपट।।

(ड.) जेहने जेहवा.....थी खाय।।

प्र12 कोई तीन विषयों पर पद्य लिखें। 9

(क) असाधु (ख) परख (ग) मोह (घ) संसार (ड़) द्वेष